बी.ए. द्वितीय वर्ष
हिन्दी साहित्य (प्रथम पत्र)
रीतकाल काव्य साहित्य

नोट– निम्नलिखित में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

Answer any three questions of the following.

1. 'केशव का आचार्यत्व निर्भ्रान्त रूप से प्रमाणित है। इस कथन को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

अथवा

'बिहारी ने सतसई में गागर में सागर भरा है' प्रस्तुत कथन को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

2. 'मोहि तो मेरे कवित्त बनावत' घनानन्द के इस कथन को स्पष्ट करते हुए उनकी स्वच्छन्द काव्यधारा का निरूपण कीजिए।

अथवा

'देव आचार्य कवि थे, रीतिकालीन कवियों में उनका श्रृंगार वर्णन बहुत ही आकर्षक है। इस कथन की समीक्षा कीजिए।

3. रीतिकाल की सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक एवं साहित्यिक परिस्थितियाँ स्पष्ट कीजिए।

अथवा

रीतिकाल के नामकरण पर तर्क सहित निबंध लिखिए

4. रीतिकाव्य में निरूपित नायिका के लक्षण एवं भेदों का स्पष्टीकरण कीजिए।

अथवा

रस सिद्धान्त तथा रस सूत्र की संपूर्ण व्याख्या कीजिए।

5. रीतिमुक्त कवियों की विशेषताएं स्पष्ट कीजिए।

अथवा

रीति' शब्द का तात्पर्य क्या है? रीतियों के भेद स्पष्ट कीजिए।

6. सेनापति के काव्य सौन्दर्य का विशद विवेचन प्रस्तुत कीजिए।

अथवा

"आचार्य देव के काव्य की ब्रज भाषा में ध्वन्यात्मकता, लाक्षणिकता, चित्रमयता तथा स्वाभाविकता का सुन्दर समन्वय हुआ है।" इस कथन की सोदाहरण समीक्षा कीजिए।

7. "घनानन्द के काव्य में भव–सौन्दर्य के साथ–साथ अनुभूति सौन्दर्य भी उत्कृष्ट है।" इस कथन की समीक्षा कीजिए।

अथवा

'बिहारी की अलंकार योजना की समीक्षा कीजिए।

8. काव्यशास्त्र में अलंकार संप्रदाय की परम्परा पर प्रकाश डालते हुए हिन्दी रीतिकाव्यशास्त्र में प्रदर्शित अलंकारों का वर्गीकरण कीजिए।

अथवा

रीतिबद्ध और रीतिमुक्त कवियों की प्रवृत्तियों में अंतर स्पष्ट कीजिए।

9. हिन्दी साहित्य के रीतिकालीन काव्य परम्परा पर निबन्ध लिखिए।

अथवा

रीतिकाल की प्रवृत्तियाँ उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

10. रीतिसिद्ध कवियों की विशेषता बताइए।

अथवा

रीतिकाल का नामकरण 'रीतिकाल' ही क्यों रखा गया। स्पष्ट कीजिए।

11.सेनापति के ऋतु वर्णन की विशेषताओं की सोदाहरण समीक्षा कीजिए।

अथवा

'घनानंद प्रेम की पीर के कवि थे।' इस कथन की सोदाहरण विवेचना कीजिए।

12.'बिहारी एक सफल मुक्तक कवि थे' इस कथन की सोदाहरण पुष्टि कीजिए।

अथवा

'केशवदास को कठिन 'काव्य का प्रेत' कहा जाता है।' इस कथन की उदाहरण सहित व्याख्या कीजिए।

13. काव्यशास्त्र में अलंकार संप्रदाय की परम्परा पर प्रकाश डालते हुए हिन्दी रीतिकाव्यशास्त्र में प्रदर्शित अलंकारों का वर्गीकरण कीजिए।

अथवा

रीतिकाव्य में निरूपित नायिका के लक्षण एवं भेदों का स्पष्टीकरण कीजिए।

14. रीतिकाल की प्रवृत्तियों पर एक निबन्ध लिखिए।

अथवा

रीतिबद्ध और रीतिमुक्त कवियों की प्रवृत्तियों में अंतर स्पष्ट कीजिए।

15. रीतिकाल को 'अलंकार' नाम क्यों नहीं दिया गया। स्पष्ट कीजिए।

16. हिन्दी साहित्य की 'सतसई काव्य परम्परा' में बिहारी सतसई का महत्त्व स्पष्ट कीजिए

अथवा

रामचन्द्रिका की प्रबन्धात्मकता पर विचार व्यक्त कीजिए तथा उसके गुण–दोषों की समीक्षा कीजिए।

17. स्वछन्द धारा के कवियों में घनानन्द का महत्त्व बताइये।

अथवा

'देव श्रृंगार के कवि हैं' इस कथन के आलोक में देव काव्य में वर्णित श्रृंगार रस की विवेचना कीजिए।

18. सेनापति के काव्य सौन्दर्य पर एक निबन्ध लिखिये।

अथवा

आचार्य देव की काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

19. रीतिकाल की प्रेरक परिस्थितियों पर निबंध लिखिये।

अथवा

रीतिकाल के नामकरण पर तर्क सहित निबंध लिखिये।

20. निम्नलिखित पद्यांषों में से किन्हीं तीन की सप्रसंग व्याख्या कीजिए–

1. जेहि सर मधु मद मरदि महासुर मर्दन कीन्हेऊ।
मारेउ कर्कश वर्क, शंख, हति शंख जो लीन्हेउ।
निष्कंटक सुरकंटक कर्‌यौ कैटम–वपु खण्ड्यो।
खर दूषण त्रिसिरा कबंध तरू खण्ड विहण्ड्यो।।
कुम्भकरण जेहि संहरयो पल न प्रतिज्ञा ते टरौं।

तेहि बाण प्राण दसकण्ड के कण्ड दसौं खण्डित करौ।।

2. तंत्री नाट कवित–रस सरस राग, रति रंग।
अनबूड़े बूड़े तरे जै बूड़े सब अंग ।।

3. सुधि करै भूल की सुरति आय जाय
तब सब सुधि भूलि कूकों गहि मौन कों।
जाते सुधि भूलै सो कृपा ते पाइयत प्यारे,
फूलि फूलि भूलौ या भरोसे सुधि हौन को।
मेरी सुधि भुलहिं विचारिये सुरति नाथ,
चातक उमाहैं घन आनन्द अचौन कौं।
ऐसी भूलहुँ सों सुधि रावरी न भूलै क्यों हूँ,
ताहि जो विसारौ तो संभारो किरि कौन को।

4. कथा में न कंथा मैं न तीरथ के पंथा मैं न,
पोथी मैं न पाथ में न साथ की बसीति मैं।
जटा मैं न मुण्डन मैं न, तिलक त्रिपुण्डन मैं न,
नदी कूप कुंडन अन्हात दान रीति मैं।
पीठ–पाठ–मंडल न, कुण्डल कमण्डल न,
माला दण्ड मैं न देव देहरे की भीति मैं,
आयु ही अपार पाराबार प्रभु पूरि रह्यो,
पाइये प्रगट परमेसुर प्रतीति मैं।

5. झहरि–झहरि भीनी बूंद है परति मानौं,
घहरि–घहरि घटा घेरि है गगन में।
आनि कह्यो स्याम मो सो चलो झूलबे को आज,
फूली न समानी भई ऐसी हों मगन में।
चाहत उठाई उठि गई सो निगोडी नींद,
सोय गये भाग मेरे जागि वा जगन में।
आँखि खोलि देखौं तो न घन हैं, न घनस्याम,
बेहि छाई बूँदें, मेरे आँसू ह्वै दृगन में।।

6. बानी सौ सहित सुबरन मुँह रहे जहाँ,
धरति बहुत भाँति अरथ समाज कौं।
संख्या करि लीजै अलंकार हैं अधिक यामैं,
राखौ मति ऊपरि सरस ऐसे साज कौ।।
सुन महाजन चोरी होति चारि चरन की,
तातैं सेनापति कहैं तजि करि ब्याज कौं।
लीजियौ बचाई ज्यों चुरावै नाहिं कोई सौंपि
वित्त की सा थाती मैं कवितन की राज कौं।।

7. कालिन्दी की धार निरधार है अधर, गन
अलिके धरत जा निकाई के न लेस हैं।

जीते अहिराज, खंडि डारे है सिंघडि घन,
इन्द्रनील कीरति कराई नाहिं ए सहैं।।
रगडिन लगत सेना हिय के हरष कर,
देखत हरत रति कंत के क्लेस हैं।।

8. तब तौ छवि पीवत जीवत है अब सोचन लोचन जात जरे।
हिय पोष के तोष सु प्रान पले, विललात महादुख दोष भरे।।
घन आनन्द गीत सुजान बिना, सब ही सुख साज समाज हरे।
तब हार पहार से लागत है, अब आनि कै बीच पहार परे।

9. सब जाति फटी दुख की दुपटी, कपटी न रहै जँह एक घटी।
निघटी रुचि मीच घटी हूं घटी, जग जीव यतीन की छूटि तटी।।
अघ–ओघ की बेरि कटी बिकटी, निकटी प्रकटी गुरूज्ञान गटी।
चहुँ ओरन नाचति मुक्ति नटी, गुण घुरजटी वन पंचवटी।।

10. हीन भए जल मीन अधीन कहा कछु मो अकुलानि समानै,
नीर सनेही को लाय कलंक निरास ह्वै कायर त्यागत प्रानै।
प्रीति को रीति सु क्यौं समुझैं जड़, मीत के पानि परैं को प्रमानैं,
या मन की जु दसा घनआनन्द जीव की जोवनि जान हो जानै।।

11. देव सवै सुखदायक संपत्ति,
संपत्ति कौ सुख दंपति जोरी।
दंपति दीपित प्रेम प्रतीति,
प्रतीति की रीति सनेह निचोरी।।
प्रीति तहां गुन रीति विचारि,
विचारि को बानि सुधारस बोरी।
बानी को सार बखान्यौ सिंगार,
सिंगार को सार किसोर किसोरी।।

12. कालिन्दी की धार निरधार है अधर, गन
अलिके धरत जा निकाई के न लेस हैं।
जीते अहिराज, खंडि डारे है सिंघडि घन,
इन्द्रनील कीरति कराई नाहिं ए सहैं।।
रगडिन लगत सेना हिय के हरष कर,
देखत हरत रति कंत के क्लेस हैं।
चीकने, सघन, अंधियारे तैं अधिक कारे,
लसत लछारे सटकारे तेरे केस हैं।।

13. भए अति निठुर, मिटाय पहिचानि डारी,
याहि दुख हमैं जक लागी हाय हाय है।
तुम तो निपट निरदई, गई भूलि सुधि,
हमैं सूल–सेलानि सो क्यों हूं न भुलाय है।

मीठे–मीठे बोल बोलि, ठगी पहिलें तौ तब,
अब जिय जारत कहाँ धौं कौन न्याय है।
सुनी है कै नाहीं, यह प्रकट कहावति जू,
काहू कलपाय है सु कैसें कल पाय है।।

14. कुल की सी करनी कुलीन की सी कोमलता,
शील की सी सम्पति सुषील की सी कामिनी।
दान को सो आदरू उदारताई सूर की सी,
गुनी की लुनाई गुनमंती गजगामिनी।।
ग्रीषम को सलिल सिसिर को सो धाम 'देव'
हेंउत हसंती जलदागम की दामिनी।
पून्यो को सो चांद, परमात को सो सूरज,
सरद को सो बासरू बसन्त की सी जामिनी।।

15. जेठ नजिकाने सुधरत खसखाने, तल,
ताख तहखाने के सुधारि झारियत है।
होति है मरम्मत विविध जल जंत्रन की,
ऊँच ऊँच अटा ते सुधा सुधारियत है।
सेनापति अतर गुलाब अरगजा साजि,
सार तार हार मोल लै लै धारियत हैं।
ग्रीषम के वासर बराइवे का सीरे सब,
राज भोग काज साज सौं सम्भारियत हैं।।

16. अति अगाधु, अति ओथरौ, नदी कूल सरू बाइ।
सो ताकौ सागरू जहाँ, जाकी प्यास बुझाई।।

बी.ए. द्वितीय वर्ष– हिन्दी साहित्य (द्वितीय पत्र)

नोट– निम्नलिखित में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

Answer any three questions of the following.

1. 'कबिरा खड़ा बाजार में' नाटक के माध्यम से लेखक ने सामाजिक जड़ता और सत्ता के अहं को तोड़ने का प्रयास किया है। उक्त कथन को स्पष्ट कीजिए।
2. 'दीपदान" एकांकी के नामकरण, कथानक, पात्रयोजना और उद्देश्य पर प्रकाश डालिए।
3. 'राम रहमान' एकांकी के शीर्षक पर विचार करते हुए इसके औचित्य तथा मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए।
4. समाज –दर्पण एकांकी की कथासार प्रस्तुत कीजिए।
5. 'बीर बल्लू' एकांकी की मूल संवेदना और उद्देश्य पर प्रकाश डालिए।

   अथवा

   नाटक के प्रमुख तत्त्वों का उल्लेख कीजिए।

6. 'सिंह जागरण' एकांकी में ऐतिहासिक आदर्शवाद की प्रतिष्ठा के साथ व्यंग्यात्मकता की क्रान्तिकारी अभिव्यक्ति हुई है। इस कथन पर सोदाहरण प्रकाश डालिए।
7. सूर्य बीज रेडियो रूपक के कथानक का सार लिखते हुए उसके उद्देश्य को स्पष्ट कीजिए।

8. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की भाषा शैली पर प्रकाश डालते हुए साहित्य में उनका स्थान निर्धारित कीजिए।
9. 'तुलसी के सामाजिक मूल्य' निबन्ध के आधार पर भारतीय समाज को तुलसीदास की देन विषय पर एक लेख लिखिए।
10. हिन्दी निबन्ध : विकास के सोपानों पर प्रकाश डालिए।

    अथवा

    आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के निबन्ध 'साहित्य के नये मूल्य' के विचारों का सारांश लिखिए।

11. 'कबिरा खड़ा बाजार में नाटक के आधार पर कबीर का चरित्र–चित्रण कीजिए।
12. 'दीपदान' के आधार पर पन्नाधाय का चरित्र–चित्रण कीजिए।
13. आचार्य शुक्ल के निबन्ध लोक जागरण और भक्ति काव्य के आधार पर बताइये कि निर्गुणधारा की शाखाओं ने किस प्रकार से लोक जागरण किया।
14. नाटक के उद्‌भव एवं विकास पर प्रकाश डालिए।
15. कबिरा खड़ा बाजार नाटक की तात्त्विक समीक्षा कीजिए।
16. साहित्य के नये मूल्य निबन्ध के महत्व पर प्रकाश डालिए।
17. सिंह जागरण एकांकी की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए।
18. निबन्ध के उद्‌भव विकास पर प्रकाश डालिए।

    अथवा

    नाटक एवं एकांकी में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

19. निम्नलिखित गद्यांशों में से किन्हीं तीन की सप्रसंग व्याख्या लिखिए–

1. "वह मेरे दिल की बात कहते हैं। मैं उनकी बातें सुनता हूँ तो न व्रत–उपवास है लगता है, मेरे अन्दर की गाँठें खुल रही हैं। मेरे संशय दूर हो रहे हैं। वह प्रेम की बातें कहते हैं, ऐसा प्रेम जिसमें न पूजा–पाठ है, न ऊँच–नीच है। उसमें बस सबके लिए प्रेमभाव है और भगवान की भक्ति है।"
2. "आँधी में आग की लपटें तेज ही होती हैं, सोना! तुम भी उसी आँधी में लड़खड़ा कर गिरोगी। तुम्हारे ये सारे नुपुर बिखर जायेंगे। न जाने किस हवा का झोंका इन गीतों की लहरों को निगल जायेगा। चित्तौड़ राग–रंग की भूमि नहीं है, जौहर की भूमि है, यहाँ आग की लपटें नाचती हैं, सोना जैसी रावल की लड़कियाँ नहीं।"
3. "हिन्दू होते हुए भी शिवा के लिये इस्लाम धर्म पूज्य है। इस्लाम के पवित्र स्थान उसके पवित्र ग्रन्थ सम्मान की वस्तुएं हैं। शिवा हिन्दू और मुसलमान प्रजा में कोई भेद नहीं समझता। अरे! उसकी सेना में मुसलिम सैनिक तक है। वह देश में हिन्दू राज्य नहीं, सच्चे स्वराज की स्थापना चाहता है।"
4. "तुम भगवान हो भाई, जो मादरे–वतन को आजाद देख लोगे। मैं आज हिन्द फौज की फतहयाबी नहीं देख सका। मुल्क के आजाद होने से पहले ही जा रहा हूँ। ओह! अब ना जाने कब मिलेंगे। नेताजी को मेरा संदेश पहुँचा देना कि मैंने राष्ट्रीय झण्डे के नीचे देश की आजादी के लिए हँसते–हँसते जान दी।"
5. "शायद यह राणा न हो, कोई छलिया उनके रूप में धोखा देने आया हो। वह ऐसे कायर न थे। उनकी रगों में न हारने वाली शक्ति, उनके लहू में न बुझने वाली अग्नि, उनकी भुजाओं में न झुकने वाली ताकत थी। मैंने उनको निकट होकर देखा है। मैंने उनका दिल पढ़ा है– वे सूरमा थे। उनको आन प्यारी थी, उनको जान प्यारी न थी।"
6. "भक्ति आन्दोलन की जो लहर दक्षिण से आई उसी ने उत्तर भारत की परिस्थितियों के अनुरूप हिन्दू–मुसलमान दोनों के लिए एक सामान्य भक्ति मार्ग की भावना कुछ लोगों में जगाई। हृदय पक्ष शून्य सामान्य अन्तसाधना का मार्ग निकालने का प्रयत्न नाथ पंथी कर चुके थे, पर रागात्मक तत्त्व से रहित साधना से ही मनुष्य की आत्मा तृप्त नहीं हो सकती।"
7. सामन्ती समाज के साहित्य की सबसे बड़ी कमजोरी होती है– निष्क्रियता। तुलसी का साहित्य निष्क्रियता का साहित्य नहीं है। धनुर्धर राम रावण का वध करने वाले पुरुषोत्तम हैं।समुद्र उनकी विनय नहीं सुनता, तब वह "भय बिनु होय न प्रीति" का मंन्त्र सिद्ध करते हैं। तुलसी का साहित्य जीवन की अस्वीकृति का साहित्य नहीं है, वे उन लोगों का मजाक उड़ाते हैं जो काम, क्रोध के भय के मारे रात को सो नहीं पाते–"जागै जोगी जंगम जती जमाती ध्यान धरे डरे उन भारी लोभ मोह कोह काम के।" केवल राम का भक्त चैन से होता है–"सोवै सुख तुलसी भरोसे एक राम के।"

8. "कवि चित्त जब बाह्य परिस्थितियों के साथ समझौता नहीं कर पाता, तब छन्दों की भाषा अत्यन्त प्रभावशाली होकर प्रकट होती है। आन्तरिक सौन्दर्यानुभूति और बाहरी असुन्दर–सी लगने वाली परिस्थिति की टकराहट से जो विक्षोभ पैदा होता है वह सभी देशों में काव्य की भाषा को मुखर बना देता है, उसमें मूर्त रूप और आवेग के पंख लगा देता है।"
9. लेकिन अगर मजहब की खिदमत उन्हीं लोगों तक रहती तो कोई भी मजहब आगे नहीं बढ़ पाता। मजहब के नाम पर सल्तनतें बनती हैं और सल्तनतों के साये में मजहब पनपते हैं, हाकिम की तलवार दीन की खिदमत करती है। क्या समझे? यह बड़ी फलसफें की बातें हैं।
10. यही खण्डन–मण्डन। यह कवि का काम नहीं है। कवि की साधना तो सरस्वती देवी के चरणों में होती है, गलियों बाजारों में नहीं होती। कवि के कानों में तो स्वर्ग की अप्सराओं के घुंघरू बजते हैं।
11. पागलपन कहीं कम होता है, पहाड़ बढ़कर कभी छोटे हुए हैं, नदियां आगे बढ़कर कभी लौटी हैं, फूल खिलने के बाद कभी कली बने हैं? सब आगे बढ़ते हैं। नहीं बढ़ती हो तो केवल तुम। सदा एक सी। तुम्हारा पागलपन भी सदा एक सा।
12. सगुणोपासक भक्त भगवान के सगुण और निर्गुण दोनों रूप मानता है। पर भक्ति के लिए सुगुण रूप ही स्वीकार करता है निर्गुण रूप ज्ञान मार्गियों के लिए छोड़ देता है। सब सगुणधर्मी भक्त भगवान के व्यक्त रूप के साथ–साथ उनके अव्यक्त और निर्विशेष रूप का निर्देश करते आये हैं, जो बोधगम्य नहीं। वे अव्यक्त की ओर संकेत भर करते हैं, उसके विवरण में प्रवृत्त नहीं होते।
13. जब तक किसी की नजर में एक ब्राह्मण है और दूसरा तुर्क, तब तक वह इन्सान को इन्सान नहीं समझेगा। मैं इन्सान को इन्सान के नाते गले लगाने के लिए मन्दिर के सारे पूजा–पाठ व विधि अनुष्ठान छोड़ता हूं और मस्जिद के रोजा नमाज भी छोड़ता हूं। मैं इंसान को इंसान के रूप में देखना चाहता हूं।
14. एक वक्त में एक का समर्थन करो, दूसरे का विरोध, इस प्रकार दोनों से तुम्हें लाभ पहुंच सकता है। हवा का रूख देखते रहना चाहिए। आँधी–तूफान में वही पेड़ बचे रहते हैं जो आँधी के आगे झुक जाते हैं, जो पेड़ नहीं झुकते हैं, वे जड़ से उखड़ जाते हैं।
15. संघर्ष, विग्रह, घृणा, हिंसा, प्रतिशोध तो पाप है। प्रेम से ही शांति की स्थायी तौर पर स्थापना की जा सकती है जहाँ प्रेम और शांति है वहीं जीवन है, विकास है और जहां घृणा और प्रतिशोध है वहाँ विनाश है। हिंसा के हथियार को फेंक देने के बाद ही प्रेम का प्याला प्रस्तुत किया जा सकता है। आवेश और क्रोध को वश में कर लेने से ही शक्ति बढ़ती है और आवेश को आत्मबल के रूप में बदलकर ही मनुष्य विजयी हो सकता है।